बाइबल टीचर

वर्ष 16 | जुलाई 2019 | अंक 8

सम्पादकीय

क्या आप शांति कराने वाले हैं या शांति भंग करने वाले हैं?

बाइबल शिक्षा देती है कि ''देखो क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिलकर रहे'' (भजन 133:1)। कई हजार साल पहले दाऊद के द्वारा यह बात लिखी गई थी कि भाई लोग शांति के साथ मिलकर रहें। यीशु ने भी शांति से रहने के ऊपर जोर दिया था। उसने कहा था, ''धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे'' (मत्ती 5:9)। अब कलीसिया में कई बार ऐसी समस्याएं खड़ी हो जाती है जिनके कारण शांति भंग हो जाती है। क्योंकि कलीसिया हम मनुष्यों से मिलकर बनी है तथा सबके अपने विचार और सोचने का तरीका अलग-अलग होता है, सब अपनी-अपनी जगह अपने को उचित ठहराने की कोशिश करते हैं। कई बार हमारे अपने विचार आपस में मेल नहीं खाते और इस कारण शांति भंग होने लगती है। हमें एक मसीही होने के नाते बड़ी गम्भीरता से विचार करना है कि क्या हमारे द्वारा कलीसिया की शांति भंग हो रही है या दृण हो रही है?

प्रेरित पौलुस के विषय में हम जानते हैं कि वह मसीही बनने से पहिले कलीसिया को सताया करता था तथा मसीही उससे डरते थे। प्रेरितों 9 में हम पढ़ते हैं कि वह चाहता था कि यरूशलेम की कलीसिया में मैम्बरशिप ले ले, परन्तु कुछ लोग अभी विश्वास नहीं कर रहे थे कि वह यीशु का चेला बन गया है। अब वहां कलीसिया में खलबली मच गई कि उसे मैम्बरशिप दे या न दे। एक बुद्धिमान मसीही था जिसका नाम था बरनाबास उसने कहा उसे हम अपने साथ ले लें क्योंकि वह शांतिप्रिय व्यक्ति था। उसके नाम का अर्थ है ''शांति का पुत्र।'' (प्रेरितों 4:36)। कुछ लोग कलीसिया में कुछ बातों को इतना कठिन बना देते हैं कि कलीसिया की शांति भंग हो जाती है, परन्तु बरनाबास ने पूरा प्रयत्न किया कि शांति स्थापित हो जाए। कई बार जब कलीसिया में कोई कठिन समस्या खड़ी हो जाती है तब हम उसे किस प्रकार से सुलझाने की कोशिश करते हैं? क्यों हम हालात को कठिन बना देते हैं? इब्राहिम के विषय में हम जानते हैं कि वह शांति पसंद करता था। वह परमेश्वर का एक बहुत बड़ा सेवक था। इब्राहिम और लूत के बीच में एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई तथा इब्राहिम इतना बुद्धिमान था कि उसने अपना पूरा प्रयत्न किया कि उसके परिवार कि शांति भंग न हो। एक बहुत अच्छी बात जो इब्राहिम ने कही तथा ऐसी बात प्रत्येक मसीही तथा चर्च

लीडर में होनी चाहिए। उसने कहा, ''मेरे और तेरे बीच में, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई बंधु है।'' (उत्पत्ति 13:8) इब्राहिम शांति के लिये अपना नुकसान तक उठाने को तैयार था। आप इस बात को नवीं आयात में पढ़ सकते हैं। हम मसीही कई बार इस बात में चूक जाते है, क्योंकि हम अपने लाभ की चिंता अधिक करते हैं। पौलुस प्रेरित ने बड़ी ही सुन्दरता से मसीहीयों को लिखा था कि ''मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन दूसरों की हित की भी चिंता करे। जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। यदि हम मसीही एकता को बनाये रखना चाहते हैं तो हमें पौलुस के इन शब्दों पर ध्यान देना पड़ेगा। परन्तु हम मनुष्य हैं, और हमारे अन्दर अभिमान उत्पन्न हो जाता है, तथा अभिमान से हमारा व्यवहार बदल जाता है और हम सोचने लगते है कि मेरी कमीज़ सबसे अधिक सफ़ेद है। अर्थात मैं सबसे अच्छा हूं।

अब बाइबल में हम एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं, जिसका नाम है दियुत्रिफस। यह व्यक्ति अपने को कलीसिया में बड़ा समझता था। जो लोग अपने को बड़ा समझते हैं यानि मसीही लोग, वो कलीसिया में भेदभाव की भावना को लाते है। यीशु ने कहा था जो अपने को बड़ा बनायेगा, वह छोटा किया जायेगा। यीशु इतना महान था, परन्तु उसने कभी भी दूसरों के सामने अपने को बड़ा नहीं बनाया। वह इतना नम्र था कि उसने अपने चेलों के पैर धोये तथा फिर तौलिये से पोछें। क्या ऐसी नम्रता कलीसिया में आज देखने को मिलती है? शायद नहीं। हमें कलीसिया में एक दूसरे से प्रेम करके उनका आदर करना है। प्रेरित पौलुस कहता है, ''सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे उसके योग्य चाल चलो अर्थात धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। (इफि. 4:1-3)

एक और बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि जो शांति रखने वाला व्यक्ति है वह ऐसे अवसर की खोज में रहेगा कि किसी भी प्रकार से शांति बनी रहे। यदि कलीसिया में किसी कारणवश कोई ऐसी बात है जिससे शांति भंग हो रही है तब हमें अपने मनों से सब कड़वाहट निकाल कर यह प्रयत्न करना चाहिए कि शांति स्थापित हो जाये। यदि हमारे मन में किसी भाई के प्रति कोई अनुचित धारणा है तो उसे क्षमा करके यह प्रयत्न करे कि मसीह की देह को कोई चोट न पहुंचें। प्रेरित पौलुस कलीसिया की एकता तथा सुरक्षा के लिये आंसु बहाता था, क्योंकि उसे कलीसिया की चिंता थी। यदि किसीभाई की किसी से अनबन हो गई है तो उसके लिये सबसे बड़िया फार्मूला पौलूस ने दिया है। वह कहता है, ''और एक दूसरे पर कृपाल और करूणामय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किऐ वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो (इफिसियों 4:32)। प्रत्येक मसीही की यह कोशिश होनी चाहिए कि कलीसिया में शांति बनी रहे। पौलुस कहता है, ''प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है, प्रेम डाह नहीं करता, प्रेम अपनी बढ़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह

अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनंदित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनंदित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है और सब बातों में धीरज धरता है।'' (1 कुरि. 13:4-7)।

कई बार कलीसिया में छोटी-छोटी बातों से फूट पड़ जाती है जो कि गलत है। परमेश्वर फूट से घृणा करता है। बाइबल कहती है, ''मूर्खता के विवादों, और वंशावलियों और बैर विरोध और उन झगड़ों से जो व्यवस्था के विषय में हो बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ में हैं।'' (तीतुस 3:9)। कई बार भाईयों के बीच में विवाद हो जाता है कि कलीसिया के कार्य को कैसे किया जाए या अगुआई करने में किसे इस्तेमाल करना है, या कई बार पैसे को लेकर भी विवाद हो जाता है। यह सब बातें आपस में बैठकर सुलझाई जा सकती है ताकि कलीसिया की शांति भंग न हो। कई बार भोजन पर भी आपस में विवाद हो जाता है। कोई कहता है सिर्फ सागपात खाओ तो कोई कहता सब कुछ खाओ। प्रेरित पौलुस इसके लिये एक अच्छी सलाह देता है। वह कहता है, ''जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति मे ले लो, परन्तु उस की शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं। क्योंकि एक को विश्वास है कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग पात ही खाता है। और खाने वाला न खाने वाले को तुच्छ जाने, और न खाने वाला खाने वाले पर दोष लगाएं; क्योंकि परमेश्वर ने उसे भी ग्रहण किया है। (रोमियों 14:1-3)। जो शांति बनाकर रखना चाहते हैं वो लोग ऐसी बातों पर विवाद नहीं करते।

प्रत्येक मसीही जन को यह जानना चाहिए कि मसीह की कलीसिया के द्वारा शांति का पाठ दिया जाता है तथा हमें पूरा भरसक प्रयत्न करके दिखाना है ताकि कलीसिया में शांति बनी रहे। यीशु और उसके उद्धार को याद रखें। आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम अपने परिवारों में तथा कलीसिया में शांति बनाकर रखें। क्योंकि भाईयो के बीच में शांति और एकता से प्रभु प्रसन्न होता है।

प्रत्येक मसीही, पूरा प्रयत्न करे कि ''वह बुराई को छोड़े और भलाई ही करे; और मेल मिलाप को ढूंढ़े और उसके यत्न में लगा रहे।'' (1 पतरस 3:11) तो आज प्रत्येक मसीही के लिये प्रश्न यही है कि क्या आप शांति कराने वाले हैं? या शांति भंग करने वाले हैं। जरा सोचिये।

क्या सभी कलीसियाएं एक ही हैं?

सनी डेविड

अकसर कई बार यह सवाल पूछा जाता है, कि क्या सभी कलीसियाएं एक ही हैं? या, यदि कोई किसी भी कलीसिया का सदस्य बन जाए तो क्या यह सही है? कलीसिया, अर्थात् ''चर्च'', जैसा कि अंग्रेजी में कहा जाता है, वास्वत में लोगों के एक झुंड को कहा जाता है। कलीसिया शब्द यूनानी भाषा का है। और जैसा कि हम अपनी हिन्दी की

बाइबल में, मत्ती की पुस्तक के सोलह अध्याय के 18 पद में पढ़ते हैं, कि प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। यह बात यीशु ने तब कही थी, जब प्रभु के एक चेले ने यह कहा था कि ''तू जिंदा परमेश्वर का एकलौता पुत्र मसीह है।'' प्रभु यीशु ने उस चेले से कहा था, कि यह बात तुझ पर मांस और लहू ने नहीं परन्तु परमेश्वर पिता ने प्रकट की है. अर्थात यह, कि ''मसीह जिंदा परमेश्वर का एकलौता पुत्र है।'' और इसी चट्टान पर, यीशु ने पतरस से कहा था, मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। यह बात, कि मसीह परमेश्वर का एकलौता पुत्र है, एक चट्आन की मानिन्द है, जिसे हिलाया नहीं जा सकता। यानि यह बात बिल्कुल पक्की, दृढ़ और माकूल है। और इसी चट्टान के ऊपर मसीह ने कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। कलीसिया शब्द यूनानी भाषा का है, और इस शब्द कलीसिया का अर्थ है- लोगों की एक मंडली, एक जमायत। लेकिन इस बात पर अवश्य ध्यान दें कि मसीह ने कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और बाइबल हमें बताती है, कि अपने वायदे के मुताबिक, मसीह ने वास्तव में आरंभ में अपनी ही कलीसिया को बनाया था। और मसीह ने आरंभ में अपनी कलीसिया को इस प्रकार बनाया था, कि जब लोगों ने उसके मुक्ति देने वाले सुसमाचार को सुनकर उस पर विश्वास किया था, और अपना-अपना मन फिराया था, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लिया था, तो मसीह ने उसको अपनी कलीसिया में, अर्थात् अपने अनुयायीयों के झुंड में मिलाया था। और इस प्रकार अब वे सब मिलकर मसीह की जमायत या मसीह की कलीसिया बन गये थे- जैसा कि हम बाइबल में प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में 38 से 47 आयतों तक पढ़ते हैं। इसके बाद, आने वाले समय में जगह-जगह पर जहां कहीं भी मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया गया और लोगों ने सुनकर विश्वास किया, और अपना-अपना मन फिराकर बपतिस्मा लिया वहीं पर मसीह की कलीसिया का आरंभ हो गया था। और इस तरह से जगह-जगह पर अनेकों स्थानों में सैंकड़ों और हजारों मसीह की कलीसियाएं स्थापित हो गई थी। सो जब प्रेरित पौलुस ने रोमियों की पुस्तक के 16 अध्याय के 16 पद में लिखा था, तो उसने कहा था, कि ''मसीह की सारी कलीसियाएं तुम्हें नमस्कार कहती है।'' यानि प्रेरित पौलुस के समय में जितनी भी कलीसियाएं थीं, वे सब की सब केवल मसीह की कलीसियाएं ही थीं।

किन्तु, अब सवाल यह उठता है, कि जबकि आरंभ में मसीह ने केवल एक अपनी ही कलीसिया को बनाया था; और जब जहां कहीं भी मसीह लोगों के झुण्ड थे या उनकी मंडलियां या जमायतें थीं, तो वे सभी मसीह की कलीसियाएं ही कहलाती थीं। तो क्या आज ऐसा नहीं हो सकता? और अगर ऐसा हो सकता है, तो फिर आज ऐसा क्यों नहीं है? इस बात को समझने के लिये हम एक बीज की मिसाल लेते हैं मान लीजिए, आप मेरे पास दिल्ली आएं। और मेरे घर के बाहर लगी भिन्डी को देखकर आप प्रभावित हो जाएं। ओर आप मुझसे कहें कि आप भी अपने घर वापस लौटकर ऐसी ही भिन्डी अपने यहां भी लगाना चाहते है। सो मैं आपको एक लिफाफे में उसी भिन्डी के बीच रखकर दे देता हूं। इसके बाद, आप अपने घर जाकर उन बीजों को बो

देते हैं। अब जब उस बीच से पौधे उत्पन्न होंगे, और वे बड़े होंगे तो उन से क्या पैदा होगा? क्या उन में टमाटर लगेंगे? या क्या उनमें टिन्डे लगेंगे? या कया उसमें खीरे लटकेंगे? या क्या उसमें बैंगन आलू लगेंगे? जी नहीं, यदि उनसे कुछ पैदा होगा, तो केवल भिन्डी ही पैदा होगी। सहमत है न इस बात से आप? पर अब मान लें, कि आप अपने घर वापस लौटकर मेरे दिये लिफाफे में से बीज निकालकर बो देते हैं। लेकिन जब आप इस बात को देखते हैं, कुछ समय बाद, कि उन में तो टमाटर लग रहे हैं। तो आप क्या कहेंगे? आप यह कहेंगे कि भाई सनी डेविड ने गलती से भिन्डी की जगह टमाटर के बीच दे दिये। यानि आप बीज को दोषी नहीं ठहराएंगे। क्योंकि आप जानते हैं कि बीज तो केवल वही पैदा करेगा जिस चीज का वह चीज है।

सो इस दृष्टांत से हम यह देख सकते हैं, कि आज ऐसा क्यों नहीं है कि आरंभ में जैसे कि सब जगह केवल मसीह की ही कलीसियाएं थीं आज ऐसा क्यों नहीं है। न केवल सारे संसार में, पर एक ही शहर में या एक ही गांव में भी ऐसा नहीं है। सब स्थानों पर आज अलग-अलग नामों से कहलाई जाने वाली कलीसियाएं मौजूद है। लोग मिशनों का प्रचार कर रहे हैं, और मिशनों को मान रहे हैं। कोई इस मिशन का है, तो कोई उस मिशन का है। पर अगर केवल परमेश्वर के वचन का ही प्रचार किया जाए और लोग केवल परमेश्वर के वचन को ही मानकर मसीह में विश्वास लाएं और अपना-अपना मन फिराकर उद्धार पाने के लिये मसीह की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लें जैसा कि हम बाइबल में मरकुस की पुस्तक के 16 अध्याय और 16 पद में पढ़ते हैं, तो आज भी आरम्भ की ही तरह सब स्थानों पर केवल लोग मसीही होंगे और मसीह की कलीसियाएं ही हर जगह पाई जाएंगी।

लेकिन आज क्यों लोग प्रोटेस्टैंट और कैथलिक है? मेथोडिस्ट और बैपटिस्ट हैं? लुथरन और पेन्टेकोस्टल है? क्या ऐसी शिक्षा बाइबल में हमें मिलती है? जी नहीं। बाइबल हमें ऐसी शिक्षा नहीं देती। ऐसे-ऐसे सम्प्रदायों का आरम्भ और इनकी स्थापना मनुष्यों ने स्वयं मानवीय सिद्धांतों पर की है। लेकिन परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने केवल अपनी ही एक कलीसिया को बनाया था। और जैसे कि हम बाइबल में, यूहन्ना की पुस्तक के 17 अध्याय में 20 और 21 आयतों में पढ़ते हं कि उद्धारकर्ता मसीह ने स्वयं अपनी मृत्यु से पहले अपने सब अनुयायीयों के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा था, कि जो वचन को सुनकर विश्वास करेंगे वे सब के सब एक हों- जैसे कि तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतिति करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।

सो बाइबल से हम यह सीखते हैं, कि परमेश्वर के लोग, अर्थात जिन्होंने उसके पुत्र में विश्वास किया है, और अपना-अपना मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है वे सब लोग अर्थात मसीह के अनुयायी केवल एक ही कलीसिया में है, और वह कलीसिया मसीह की कलीसिया है। वह और किसी भी अन्य नाम से नहीं जानी जाती।

मान लीजिए, आप अपना एक घर बनवाते हैं, या एक घर खरीदते हैं, तो क्या आप चाहेंगे कि वह घर मेरे नाम से कहलाए? बाइबल में प्रेरितों के कामों की पुस्तक के

20 अध्याय में और 28 पद में लिखा है, कि मसीह ने कलीसिया को अपने लहू से मोल लिया है। सो जबकि मसीह ने ऐसा बड़ा दाम देकर कलीसिया को खरीदा है, तो क्या उस कलीसिया को उसके नाम से ही नहीं कहलाना चाहिए?

मित्रो, बाइबल के अनुसार, कलीसिया केवल एक ही है। और बाइबल में पहला तीमुथियुस, 3 अध्याय और 15 पद में लिखा है, कि कलीसिया परमेश्वर का घर है। पर क्या आप उस घर में हैं, जो परमेश्वर का घर है?

बाइबल में लिखा है, कि जो लोग उद्धार पाते हैं उन्हें प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में मिला लेताहै। (प्रेरितों 2:47)। सो यदि आप मसीह की कलीसिया में हैं तो आपका उद्धार हुआ है। और यदि आप को उद्धार मिला है तो आप मसीह की कलीसिया में है और यदि आप मसीह की कलीसिया में हैं तो आप मसीह में है; क्योंकि कलीसिया मसीह की देह है। (इफिसियों 1:22, 23; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

एक दूसरे के साथ मिलकर रहना

जे. सी. चोट

हमारे अध्ययन का विषय है, एक दूसरे के साथ मिलकर रहना अर्थात बिना किसी विवाद के। हमारा संसार सब प्रकार के लोगों से भरा हुआ है। कई अरब लोग इस दुनिया में रहते हैं। अधिकतर देशों की अबादी तेजी से बढ़ रही हैं और इनमें से अधिकतर देश एशिया में है। चाईना की आबादी बहुत अधिक है। भारत देश की भी आबादी बड़ी तीव्रता से बढ़ रही है।

इस सबको देखने से यह पता चलता है कि आज मनुष्य को शारीरिक तथा आत्मिक आवश्यकताओं के प्रति जागरूक होना चाहिए। सब लोग दुनियां में एक पृथ्वी पर रहते हैं। तथा सबको यह भी पता है कि एक साथ मिलकर कैसे रहना है। हम सबको यह सीखना चाहिए कि हम एक दूसरे के साथ मिलकर रहे। कई देश कई परिवार तथा कई मसीही मिलकर नहीं रहते, इसलिये उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मसीह की कलीसिया में भी सब सदस्यों को एक साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

किसी ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति अकेले होकर कुछ करना चाहे तो उसे बड़ी कठिनाई होगी क्योंकि हमें लोगों के साथ की आवश्यकता होती है। हमें परमेश्वर की तथा एक दूसरे की आवश्यकता होती है। मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, इसलिये हमें परमेश्वर की आवश्यकता है। और मनुष्य एक सामाजिक प्राणी भी है। इसलिये उसे एक दूसरे की आवश्यकता है।

आत्मिक आवश्यकता के कारण हमें परमेश्वर के पास आना चाहिए। हमें बाइबल का अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि विश्वास सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)। हमें परमेश्वर की इच्छा पता चलेगी कि वह हम से क्या चाहता है? जब

हमारा संबंध परमेश्वर के साथ सही होगा तभी हम अपने साथियों के साथ सही संबंध रखेंगे।

इस संसार में रहते हुए हमारे माता-पिता, भाई-बहन तथा रिस्तेदार हमारे साथ होते हैं। शादी के साथ हमारे बच्चे तथा और लोगों से हमारा रिश्ता हो जाता है। कलीसिया के लोगों के साथ हमारा मेल जोल बढ़ जाता है। इसके साथ ही हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है कि हम किस प्रकार से हम एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं तब क्या हमारा व्यावहार एक मसीही जैसा होता है कि नहीं? यीशु ने हमें एक बहुत अच्छा उदाहरण दिया है, कि हम उसके पद चिन्हों पर चलें (1 पतरस 2:21)।

यीशु ने सिखाया है कि एक मसीही होते हुए हमारे जीवनों में प्रेम होना चाहिए। यीशु ने सिखाया कि हमें अपने पड़ोसी तथा परमेश्वर से अपने मन से प्रेम करना चाहिए। (मत्ती 22:36-39) उसने यह भी सिखाया कि हमें अपने शत्रुओं से भी प्रेम करना चाहिए। (मत्ती 5:44)। यदि आज लोग यीशु की शिक्षा पर चलें तो यह संसार बिल्कुल भिन्न होता। क्या ऐसा होना संभव है? हां यदि हम यीशु की शिक्षा पर चलें। यीशु ने कहा था यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे तो इसीसे लोग जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो। (यूहन्ना 13:35)।

फिर हम देखते हैं कि यीशु ने सिखाया कि जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। (मत्ती 7:12)। इसे सुनहरा नियम कहते हैं। परन्तु यीशु ने एक और बात कही थी कि जो तुमसे घृणा करते हैं, उनसे प्रेम करो। (लूका 6:27)। प्रेरित पौलूस कहता है जितना भरसक प्रयत्न हो सबके साथ भलाई करो। विशेषकर उनके साथ जो विश्वासी है। (गलतियों 6:10)।

फिर हम, यह देखते हैं कि बाइबल की शिक्षा यह है कि हम एक दूसरे को क्षमा करे। जिन्होंने हमारे विरूद्ध पाप किया है, या हमें नीचा दिखाया है, उन्हें क्षमा करें। जैसे हम दूसरों को क्षमा करते हैं परमेश्वर हमें भी क्षमा कर। (मत्ती 6:12)। यीशु ने कहा था, ''इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा न करेगा। (मत्ती 6:14-15)। पतरस ने पूछा हमें अपने भाई को कितनी बार क्षमा करना चाहिए? क्या सात बार क्षमा करना चाहिए? प्रभुने कहा ''मैं तुझसे यह नहीं कहता कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।'' (मत्ती 18:21-22)। यदि कोई कितनी बार भी क्षमा मांगता है हमें क्षमा करने के लिये तैयार रहना चाहिए।

एक दूसरे के साथ हमारा व्यावहार ईमानदारी का होना चाहिए। प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली है हम उनकी चिंता करते हैं।'' (2 कुरि. 8:21)।

परमेश्वर ने हमें कई तरीके बतायें हैं जिनके द्वारा हम लोगों के साथ मिलकर रह सकते हैं। प्रेरित पौलुस ने कुछ ऐसे तरीके बतायें है जिनके द्वारा हम मेल मिलाप के साथ लोगों के साथ रह सकते हैं। वह कहता है कि प्रेम निष्कपट हो; बुराई से

घृणा करो, भलाई में लगे रहो, भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो, आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। प्रार्थना में नित्य लगे रहो। पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उसमें उनकी सहायता करो। पहुनाई करने में लगे रहो। अपने सताने वालों को आशिष दो; आशिष दो श्राप न दो। आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करो। और रोने वाला के साथ रोओ। आपस में एकसा मन रखो, अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो, अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। बुराई के बदले किसी से बुराई न करो, जो बातें सब लोगों के निकट भली है, उन की चिंता किया करो। जहां तक हो सके तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला, क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो (रोमियों 12:9-21)।

प्रेरित पतरस भी हमें मिलजुलकर रहने के तरीके बताता है। वह कहता है ''निदान सबके सब एक मन और कृपामय'' और भाई चारे की प्रीति रखने वाले और करूणामय, और नम्र बनो। बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशिष ही दो; क्योंकि तुम आशिष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो। क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है। वह अपनी जीभ को बुराई से और अपने होटों को छल की बातें करने से रोके रहे। वह बुराई का साथ छोड़ें और भलाई ही करें; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े और उसके यत्न में रहे।'' (1 पतरस 3:8-11)।

हम और आगे बहुत सी बातों को देख सकते हैं। हम जितना भी देखें यीशु की शिक्षाएं ऐसी हैं जो मनुष्य को एक साथ मिलकर रहने में सहायता करती है। मसीहीयत में आने से हमें बहुत सारी आत्मिक आशीषें प्राप्त होती है। आज इस संसार को मसीहीयत की आवश्यकता है। यदि लोग मसीहीयत के सिद्धांतों का अनुसरण करे तो कलीसिया में, हमारे परिवार में तथा समाज में लोग शांति के साथ रह सकते हैं।

क्या यह संभव है कि यीशु में विश्वास करने वाले लोग एकता में हो?

वौलेस एलेवलैंडर

जब मसीह यीशु इस संसार में थे तो उनके सेवाकाल का समय जल्दी समाप्त होने को था। मसीह अपनी भविष्य सूचक नजरों से उस मिलने वाली निर्मम क्रूस की मृत्यु को देख सकते थे। अपने प्रेरितों व अनुयायों के लिये सोचते हुए, उन्होंने पिता से बड़े जोशीलेपन से प्रार्थना की ''कि वह सब एक हो।'' (यूहन्ना 17:21)।

उनकी प्रार्थना न केवल प्रेरितों के लिये थी, पर उनके लिये भी ''जो उनके वचन के द्वारा मसीह पर विश्वास करेंगे।'' (यूहन्ना 17:20) फिर उन्होंने प्रार्थना की, ताकि उनके सारे अनुयायी एक यानी समान भावना के हो जाएं।

अब यह तो स्पष्ट है कि मसीह ने एकता के लिये प्रार्थना की थी पर देखने में आता है कि एकता के बजाए बटवारा हो गया।

350 (तीन सौ पच्चास) से ऊपर धार्मिक समूह पाए जाते थे, और जिनमें से कईयों में बंटवारे देखने में आते थे।

तौभी उनका यह दावा था कि वह सब मसीह को मानने वाले है, उन्हीं के अनुयायी हैं परन्तु क्या ऐसी स्थिति से परमेश्वर प्रसन्न होगा?

पौलूस ने फूट पड़ने की निंदा की

मसीह की प्रार्थना के कुछ वर्षों बाद कलीसिया की स्थापना हुई। कुरिन्थस नगर में कलीसिया के प्रचारकों के कारण कलीसिया में फूट पड़ने लगी। कुछ ने दावा किया कि वह किसी मनुष्य के अनुयायी हैं, कुछ कहने लगे कि हम तो किसी और के चेले है। प्रेरित पौलुस ने इस फूट के पड़ने की तीव्र निंदा की और कहा,

''हे भाईयो....तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत, होकर मिले रहो। .....क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? (1 कुरिन्थियों 1:10-13)।

पौलुस केवल उनको आदेश दे रहा था कि वह केवल मसीह का ही अनुसरण करें और उनमें गुटबंदी न हो।

''परन्तु'' किसी ने कहा है, कि बंटवारा होने से प्रतियोगता होती है जो लाभदायक सिद्ध होती है क्योंकि इससे हर समूह मेहनत करके अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश करता है।''

तौभी सच तो यह है कि, परमेश्वर चाहता है कि एकता हो। उसके सोचने का तरीका सबसे भला है।

यदि सारे धार्मिक लोगों की ऊर्जा क्षमता उन लोगों की ओर केन्द्रित हो जाए, जिन्होंने अभी तक मसीह के बारे में नहीं सुना, बजाय हर सम्प्रदाय की भिन्न- भिन्न शिक्षाओं के सुनाने के तो शीघ्र ही सारा संसार मसीह के बारे में सुनने लगेगा।

''संभवत:'' किसी ने कहा, ''हम सब का दृष्टिकोण बाइबल के प्रति एक सा नहीं हो सकता।'' ऐसा होने पर भी बाईबल पूरे तरीके से एकता को दिखाती है। यह कोई उलझन पैदा करने वाली पुस्तक नहीं है। फूट पैदा होती है जब लोग अपने सांसारिक सिद्धांत, शिक्षाएं, विधियां बाइबल की शिक्षा के विपरीत मिलाने लगते हैं। बजाए बाईबल के अधिकार को मानने के मनुष्य के अपने निजी विचारों को परम्परनाओं को ''धार्मिक मान्यताओं को'' मानने से फूट पड़ जाती है।

''और वे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' (मत्ती 15:9)

''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और

समझाने और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' (2 तीमुथियुस 3:16-17)

मसीह ने एकता के लिये प्रार्थना की। पौलूस ने फूट पड़ने की निंदा की ''एकता में सामर्थ है।''

धार्मिक बंटवारे परिवारों को अलग कर देते हैं। किफायती ढंग से भी यह बरबादी की निशानी है। यह पड़ोसियों और मित्रों में बैर, शत्रुता को बढ़ावा देते हैं। क्या और आवश्यकता है यह बताने की कि क्यों लोगों को एकता बनाएं रखनी चाहिए।

एकता किस प्रकार सफल, बनाई जा सकती है?

बुनियादी तौर पर एकता को सफल बनाने के तीन तरीके है।

पहला आपस के समझौते से।

सम्प्रदायों के अगुवों ने पहले से ही काफी विस्तार से विचार विमर्श कर लिया था कि एकता प्राप्त करने के लिये किन बातों पर समझौता करना है? यद्यपि यह तरीका संतोषजनक नहीं है। अंतिम परिणाम सिद्धांतों का मिश्रण ही है, जो मनुष्यों के लिये सबसे अधिक सहायक है।

दूसरी कोशिश यह है कि कैथलिक संप्रदाय द्वारा धार्मिक लोगों को जोड़ा जाए। वे दावा करते हैं कि यह उन्हीं का अधिकार है और यदि एकता प्राप्त करनी है तो केवल उन्हीं के सिद्धांतों और मान्यताओं के द्वारा संभव है।

इस प्रकार से एकता को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

जिन लोगों का विश्वास बाइबल पर है वह रोम के सिद्धांतों और विचित्र रीतियों को स्वीकार कभी नहीं करेंगे।

अन्त में धार्मिक एकता केवल सच्चाई से बाइबल को खोजने से, उसके अधिकार को ग्रहण करने से (जैसा दावा उसमें किया गया है) और उसमें दी गई शिक्षाओं को मानने से ही मिल सकती है।

एकता जब ही प्राप्त होगी जब लोग बाइबल को, केवल बाइबल में दी गई शिक्षाओं को ही मानेंगे। जहां बाइबल जो कहती है उसे मानें। जहां बाइबल खामोश है वहां हम भी खामोश रहें। जहां बाइबल किसी कार्य को करने का निर्देश देती है उसको वैसे ही और केवल वैसे ही निर्देषानुसार करे।

जहां बाइबल में किसी कार्य को करने की आज्ञा है पर साफतौर से यह नहीं बताया गया कैसे करना है, उसको ऐसे करें ताकि शांति बरकरार रहे।

कार्य को ऐसे किया जाए ताकि सब धार्मिक लोगों को वह स्वीकार हो। ऐसा कार्य सफल होगा और परमेश्वर भी इसको स्वीकारेगा।

निष्कर्ष

धार्मिक एकता बरकरार रह सकती है- परन्तु यदि धार्मिक लोग बाइबल का अनुसरण करेंगे, केवल बाईबल का ही और इसके सिद्धांतों पर चलेंगे। किन्हीं और

धार्मिक मान्यताओं की आवश्यकता नहीं है। यदि यह मान्यताएं बाइबल की तरह ही शिक्षा देती हैं तो यह बेकार है; यदि वह बाइबल के अलावा कुछ और शिक्षा देती है तो वह गलत है और फूट पैदा करती है। उनको एक तरफ हटा दें। अत: हमें केवल और केवल बाइबल की शिक्षाओं, विधियों और सिद्धांतों को ही मानना है। अधिक जानकारी के लिये हमसे सम्पर्क करें।

अनुवादित : भाई फैरेल

क्या किसी पुरूष को एक से अधिक पत्नी रखनी चाहिए?

अनेक पत्नियों से विवाह रचाने की प्रथा का चलन अफ्रीका देशों और इस्लामिक विश्वास के लोगों में पाया जाता है। इस प्रथा के अनुसार एक मनुष्य एक से ज्यादा पत्नियां रख सकता है। यह प्रथा तब से चली आ रही है जब से सृष्टि की रचना हुई है। चूंकि एक से ज्यादा पत्नियां रखने का चलन बहुत पुराना है इसलिये मनुष्य इसको सही समझता है।

क्या यह सच है? नहीं

पाप दुनिया में, एक से ज्यादा पत्नियां रखने से पहले से, संसार में पाया जाता है। तो कया पाप सही है? नहीं? अगर कोई बात बहुत सदियों से चली आ रही है इसका मतलब यह नहीं कि वह सही है। कोई बात सही है इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि यह परमेश्वर की इच्छानुसार है या नहीं? परमेश्वर का नजरिया एक से ज्यादा पत्नियां रखने के बारे में कैसा है? परमेश्वर ने ही शादी की स्थापना की थी जब उसने पहला मनुष्य आदम बनाया (उत्पत्ति 1:26)। उसने देखा कि आदम का अकेले रहना अच्छा नहीं है, तब उसने आदम के लिए एक पत्नी की रचना की। यहां इस बात का ध्यान दें की कि परमेश्वर ने आदम के लिए ''पत्नियों'' की रचना नहीं की। यदि परमेश्वर चाहता कि आदम एक से अधिक पत्नियां रखे तो वह ऐसा कर सकता था। पर परमेश्वर समझता था कि एक पत्नि काफी है। परमेश्वर जानता है कि सही क्या है?

मनुष्य अलग-अलग संस्कृतियों में शादी के बारे में संसार में कई प्रकार के विचार लाया है। कुछ मनुष्य के विचार परमेश्वर की योजना से मेल खाते हैं। इसके विपरीत कुछ मनुष्य के विचार परमेश्वर की योजना से मेल नहीं खाते। यही बात हम एक से ज्यादा पत्नियों के रखने के बारे में भी देखते हैं। एक से ज्यादा पत्नियों का रखना मनुष्य का स्वयं का सोचा हुआ विचार है। इसका परमेश्वर का विवाह के बारे में योजना का कुछ लेना देना नहीं है। हर बात तो परमेश्वर की योजना के अनुसार नहीं है और परमेश्वर ने नहीं कही है। परमेश्वर की योजना के अनुसार मनुष्य के संपूर्ण जीवन के लिये केवल एक पति और एक पत्नि (उत्पत्ति 2) बाईबल में एक से ज्यादा पत्नियां रखने के कई उधारण है। पहला मनुष्य जिसने एक से जयादा

पत्नियां रखी लमेक था। (उत्पत्ति 4:19-24)।

लेमेक आदम के बाद छः पीढ़ियों तक जीवित रहा। उसके बारे में कुछ भी अच्छा नहीं लिखा है।

अब्राहम ने भी एक से ज्यादा पत्नियां रखीं थी (उत्पत्ति 16:1-5)। उसकी पत्नी सारा के भी कोई संतान नहीं थी। सारा ने अब्राहम को अपनी दासी हाजिरा की पत्नी के रूप में रखने को दिया ताकि उससे औलाद हो सके। हाजिरा से अब्राहम केलिये संतान उत्पन्न हुई। यह देखकर सारा को हाजिरा से जलन होने लगी। इस विवाह से अब्राहम के जीवन में कई कठिनाईयां उत्पन्न होने लगी।

एसाव ने भी एक से ज्यादा पत्नियां रखी। वह पहलोटा पुत्र था। एसाव ने दो हित्ती स्त्रियों से विवाह किया (उत्पत्ति 26:33-34) इन स्त्रियों की वजह से इसहाक और रिबका को बहुत दुख पहुंचा था। एक से ज्यादा पत्नियां रखने वाले मनुष्य और उसकी पत्नियों से परिवार के बाकी सदस्यों को बहुत कठिनाईयां पहुंचती है।

गिदोन : गिदोन एक शूरवीर बहादुर नेता था। कई पत्नियों से उसके 70 पुत्र उत्पन्न हुए (न्यायीयों 8:30-31) 70 पुत्रों के लिये वह ऐसा पिता नहीं बन सका जैसा परमेश्वर चाहता है कि एक पिता को होना चाहिए।

राजा सुलेमान : राजा सुलेमान की 700 पत्नियों ने उसके मन को परमेश्वर की ओर से फेर दिया (1 राजा 11:3) एक से ज्यादा पत्नियां रखने के कारण ही उसको अपने राज्य से भी हाथ धोना पड़ा।

कहीं पर भी हम बाइबल में इस बात को नहीं देखते कि एक से ज्यादा पत्नियां रखने से किसी का लाभ हुआ हो। हर जगह उसके बुरे परिणाम ही देखने को मिलते हैं। और आज भी हम ऐसा ही देखते हैं। जो लोग आज भी इस प्रथा को मानते हैं वह कई कठिनाइयों का सामना करते हैं।

आइये हम कुछ ऐसे बाइबल में लिखे मूल सिद्धांतों के बारे में देखें जो हमें एक से ज्यादा पत्नियां रखने के विरोध में शिक्षा प्रदान करती है।

उत्पत्ति 2:23-24 में लिखा है ''पुरूष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा''।

परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि पुरुष अपनी ''पत्नीयों'' से मिला रहेगा। उसने कहा कि पुरुष अपनी पत्नी'' से मिला रहेगा। केवल एक और एक ही पत्नी से।

पौलुस : प्रेरित पौलुस पति और पत्नी के संबंध की तुलना मसीह यीशु और कलीसिया के संबंध से करते हैं ''पति पत्नी का सिर है, जैसे मसीह कलीसिया का सिर है''। (इफिसियों 5:23)।

इफिसियों 1:22, 23 में लिखा है कि कलीसिया मसीह की देह है। केवल एक ही देह है। (इफिसियों 4:4) इसीलिये एक ही कलीसिया है। एक पुरुष उतनी ही पत्नियां रख सकता है जितनी मसीह की कलीसियाएं हैं। क्योंकि मसीह की एक ही कलीसिया है इसीलिये पुरुष भी केवल एक ही पत्नी रख सकता है। यह हम बाइबल में कहीं पर भी नहीं पाते कि एक पुरुष कई पत्नीयां रखे और यह बात परमेश्वर के नजदीक धार्मिक ठहरे (मत्ती 19:3-9)।

तलाक के विषय में शिक्षा

मसीह यीशु ने यह शिक्षा दी थी कि परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा कि पति-पत्नी में तलाक हो। और यही शिक्षा इस बारे में भी दी जाती है कि एक पुरुष एक से ज्यादा स्त्रियों से ब्याह न करे। मसीह ने कहा, ''मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वह दोनों एक तन होंगे। मसीह ने कहा था कि एक पुरुष एक स्त्री के साथ विवाह करे। मसीह ने कहा विवाह केवल एक पुरुष का एक स्त्री के साथ हो और दोनों मिलकर एक तन होते हैं। जब मनुष्य एक से ज्यादा पतनियां रखता है तो वह पाप करता है। परमेश्वर पाप से घृणा करता है

1 तिमुथियुस 3:2 में लिखा है: यह आवश्यक है कि अध्यक्ष (ऐलडर) एक ही पत्नी का पति हो। दो और उससे ज्यादा का क्यों नहीं? यदि यह अच्छी प्रथा है तो क्यों नहीं कलीसिया के अध्यक्ष को भी एक से ज्यादा पत्नियां रखनी चाहिये? इसका मुख्य कारण यह है कि परमेश्वर इस तरह के विवाह की आज्ञा नहीं देता। जो उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और एक से ज्यादा विवाह करते है वह परमेश्वर की नजरों में पापी है। ऐसे लोग न तो कलीसिया के सदस्य बन सकते हैं ना ही अगुवे बन सकते हैं।

आईये कुछ ऐसी समस्याओं के बारे में बाइबल में देखे जो एक पत्नी को छोड़ या उससे अधिक पत्नियां रखने में उत्पन्न होती है।

1.पहला : ऐसे विवाहों से झगड़े और ईर्ष्या (जलन) उत्पन्न होती है और ऐसे उदाहरण हमें उन परिवारों में देखने को मिलते हैं जिन्होंने एक से ज्यादा विवाह कर रखे हैं।

यूसुफ : युसूफ को उसके भाईयों ने मिसरी दास्तव में बेच दिया था केवल इसी जलन की वजह से क्योंकि उसके पिता ने कई विवाह किये थे और यह भाई अलग-अलग पत्नियों से थे और वे युसूफ से जलते थे।

2. दूसरा : कोई भी पुरुष यदि वह एक से ज्यादा पत्नियों का पति है तो वह पति का सही हक नहीं निभा सकता।

3. तीसरा : ऐसा पुरुष एक सही पिता नहीं बन सकता जैसा परमेश्वर चाहता है कि एक पिता को होना चाहिये। यदि एक पुरुष के अलग-अलग पत्नियों से कई बच्चे हैं तो वह कैसे उनका पालन-पोषण प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए कर सकता है? (इफिसियों 6:4)

4. चौथा : ऐसे मनुष्य जिसकी एक से ज्यादा पत्नियां हो वह परमेश्वर के पास आने की बजाय उससे दूर हो जाता है। हमें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिये जिसके कारण परमेश्वर से हमारी दूरी हो जाए।

5. पांचवां : ऐसे विवाह से पुरुष स्त्री का मालिक बन जाता है और परमेश्वर ने विवाह में कभी ऐसा नहीं चाहा कि पुरुष स्त्री पर प्रभुता करे। पुरुष को स्त्री का सिर और परिवार का मुखिया होने की आज्ञा है। परमेश्वर ने कहा कि पति अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे। जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम रखा (इफिसियों 5) मसीह ने कलीसिया के लिए अपनी जान दी। ऐसे ही एक पुरुष को भी अपनी पत्नी

के लिये ऐसा प्रेम रखना चाहिए। क्या ऐसा मनुष्य जिसकी कई पत्नियां हो वह ऐसा कभी कर सकता है? वह तो केवल अपने बारे में ही सोचता है वह अपने को बहुत बड़ा मनुष्य समझता है। उसे लगता है कि उसकी कई पत्नियां है इसलिये वह बहुत बड़ा आदमी है।

यदि ऐसा व्यक्ति, जिसकी कई पत्नियां हैं, एक मसीही बनना चाहता है तो उसे कया करना चाहिये : सबसे पहले उसको पश्चाताप करना है कि वह एक बहुत बड़ा पापी है, इसके पश्चात वह मसीह यीशु पर विश्वास लाये कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है। (मरकुस 16:16) इस विश्वास लाने के बाद वह मन फिराएं (प्रेरितों 2:38) इसका मतलब वह अपने सब पापों का अंगीकार करे। अपनी पहली विवाहित पत्नी को अपने साथ रख कर बाकी सब पत्नियों को त्याग करें। अपना मन फिराने के बाद वह मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण करे कि वह परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:10) अब ऐसा मनुष्य बपतिस्मा लेने के लिए तैयार है। यह बपतिस्मा मसीह यीशु की मृत्यु में शामिल होने का है : उस पानी की कब्र में जाना (रोमियों 6:3-4) जहां पापों की क्षमा है, (प्रेरितों 2:38) हर एक को ऐसा ही करना है यदि एक मसीही बनना है तो क्या अपने ऐसा किया है? क्या आपने इन सब आज्ञाओं को माना है। अगर नहीं तो आप एक मसीही नहीं है।

यदि एक मसीही बनने में हम आपकी कोई मदद कर सकें तो हमसे अवश्य सम्पर्क करें।

अनुवादितः भाई फैरेल

पहली कलीसिया

लुइस रशमोर

करीब दो हजार वर्ष पूर्व पहले कलीसिया मसीह द्वारा यरूशलेम में स्थापित की गई थी। हमारे प्रभु ने अपने सेवाकाल के समय कहा था, ''मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा....''

''और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' (मत्ती 16:18)। उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह एक कलीसिया बनाएगा यानि अपनी एक कलीसिया। वह कलीसिया किसी साधारण भवन बनाने वाली सामग्री से नहीं बनाई गई थी। वह लकड़ी, पत्थर या किसी धातु से नहीं बनाई गई थी। हमारे प्रभु की कलीसिया ''आत्मिक पत्थरों'' द्वारा निर्मित की गई थी। मसीह स्वयं उसकी नींव है, और उसके कोने के सिरे का पत्थर है।

''क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।'' (1 कुरिन्थियों 3:11) ''देखो मैं सियोन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं ....'' (1 पतरस 2:6)

''यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुछ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया।'' (प्रेरितों 4:11) और मसीही लोग दूसरे पत्थर हैं जिनसे प्रभु की

कलीसिया का निर्माण होता है। ''तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो....।'' (1 पतरस 2:5)

इस कारण जो उद्धार पाए हुए हैं यानि मसीही लोग वह हमारे प्रभु द्वारा कलीसिया में मिला दिये जाते हैं। ''....और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:47)

प्रेरितों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में कलीसिया के जन्मदिन का इतिहास मिलता है। प्रेरितों की पुस्तक के बाकी अध्यायों में मसीह की दूसरी कलीसियाओं का वर्णन पाया जाता है। जहां जहां मसीह के सुसमाचार का प्रचार हुआ वहां कलीसियायें स्थापित होती चली गई। प्रभु की कलीसियाओं को शिक्षा देने के लिये नये नियम की प्रतियां लिखी गई।

सैंकड़ों वर्षों तक धरती पर केवल एक ही कलीसिया थी। परमेश्वर के वचन में हमारे प्रभु की कलीसिया का वर्णन ''परमेश्वर की कलीसिया'' के नाम से आया है।

''परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है....। (1 कुरिन्थियों 1:2)

''परमेश्वर का घर''

''.....उन्हें यहां से ले जाओ। मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ।'' (यूहन्ना 2:16) ''मसीह की सारी कलीसियाएं।'' ''....तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16)।

निम्नलिखित मनुष्यों द्वारा स्थापित कलीसियायें या दूसरे नाम अभी तक मौजूद नहीं थे; उनका कोई अस्तित्व नहीं था।

कैथोलिक (मसीह की मृत्यु के 606 वर्ष बाद)
लूथरन (मसीह की मृत्यु के 1530 वर्ष बाद)
ऐपिसकोपल (मसीह की मृत्यु के 1534 वर्ष बाद)
प्रैसबिटीरियन (मसीह की मृत्यु के 1936 वर्ष बाद)
बैपटिस्ट (,मसीह की मृत्यु के 1611 वर्ष बाद)
मैथोडिस्ट (मसीह की मृत्यु के 1739 वर्ष बाद)

प्रभु की कलीसिया की हर मंडली हर एक दूसरी मंडली से स्वतंत्र थी तौभी, सब मंडलियां आपस में एक दूसरे के साथ नये नियम की शिक्षाओं और सिद्धांतों को मानने की वजह से धार्मिक सहभागिता रखती थी। इसके अलावा हर एक मंडली में प्राचीन लोग जो उनका नेतृत्व करते थे। (तितुस. 1:5-9); जो अध्यक्ष भी कहलाते थे। (1 तिमुथियुस 3:1-7); रखवाले और उपदेशक (इफिसियों 4:11); और चरवाहे। (1 पतरस 5:1-4) इन लोगों का चयन उनकी पवित्र शास्त्र की योग्यता के अनुसार होता था, ताकि उन मंडलियों की वह सेवा कर सकें, जहां वह आराधना करते थे; दो या तीन प्राचीन एक मंडली की सेवा करते थे।

पवित्रशास्त्र की योग्यता अनुसार हर एक मंडली में सेवकों को भी नियुक्त किया जाता था। (1 तीमुथियुस 3:8-13) यह लोग कलीसिया की आवश्यकताओं की देखभाल करते थे (प्रेरितों 6:1-6) प्रचारक (1 तीमुथियुस 4:2, रोमियों 10:13-15) और उपदेशक (इफिसियों 4:11; इब्रानियों 5:12) हर एक मण्डली को उपदेश देते थे।

कई वर्षों तक ''केवल एक ही कलीसिया'' निरंतर कार्य करती रही। हर एक मंडली स्वतंत्र थी, नये नियम की मान्यताओं और सिद्धांतों के अनुसार आत्मनिर्भर थी। प्राचीन लोग उनके कार्यों पर निगाह रखते थे, सेवक लोग सेवकाई में लगे रहते थे, प्रचारक और शिक्षक उपदेश देते थे। हर एक मंडली एक ही तरीके से आराधना करती थी। (1 कुरिन्थियों 16:12, प्रेरितों 20:7, कुलुसियों 3:16)

फिर भी कुछ मण्डलियों ने नये नियम के सिद्धांतों का विरोध करना शुरू कर दिया और उसके स्थान पर मनुष्य द्वारा दी गई शिक्षाओं को अपनाने लगे। इस बदलाव का सबसे पहला असर प्राचीनों पर पड़ा। अपने में से एक प्राचीन का चयन करके उसको उच्चतर पद पर नियुक्त कर दिया।

इन लोगों के लिये अध्यक्ष को शब्दावली सुरक्षित रखी गई थी। दूसरी समान वर्ग की मण्डलियों के अध्यक्षों के साथ इन लोगों ने सभायें करना आरंभ कर दिया। सैंकड़ों वर्षों बाद इन अध्यक्षों ने अपने बीच में से एक प्रधान अध्यक्ष या पाप का चयन किया। आहिस्ता आहिस्ता नये नियम के सिद्धांतों के हट जाने से प्रभु की कलीसिया सामान्य तौर से भ्रष्ट हो गई।

इस धीमी गति के बदलाव से कैथोलिक कलीसिया का विकास हुआ। बाद में इस कलीसिया के दो विभाजन हो गए - रोमी और यूनानी रूढ़ीवाद कलीसियायों के रूप में जो समूह रोमन कैथोलिक कलीसिया से बंट गए वह लूथरन और एंगलिकन (एपिसकोपल) कलीसियायों के नाम से पहचाने जाने लगे। इस बीच इन वर्षों में कुछ और नये संप्रदायों की स्थापना हुई जिनमें प्रैसबिटीरियन, मैनोनाईट, बैपटिस्ट और मैथोडिस्ट कलीसियाओं शामिल है। इन कलीसियाओं का निरंतर विभाजन होता रहा और कुछ और नई कलीसियाएं विकसित हो गई। आज के युग में भी प्रभु की कलीसिया के अलावा, हजारों कलीसियाएं हैं जिनको मनुष्यों ने स्थापित किया है।

नये नियम के लिखने वाले लेखकों ने यह चेतावनी दी थी कि प्रभु की कलीसिया इस भ्रष्टाचार का अनुभव करेगी (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12; 1 तीमुथियुस 4:1-3; 2 तीमुथियुस 4:3, 4; 2 पतरस 2:1-3)

''परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया हो, जो विवाह करने से रोकेंगे और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी और सत्य के पहचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं।'' (1 तीमुथियुस 4:1-3)

प्रेरित पौलुस ने विशेष सावधानी बरतने को कहा कि कुछ प्राचीन प्रभु की कलीसिया में गड़बड़ी उत्पन्न करेंगे और त्रुटियां लायेंगे (प्रेरित 20:28-30)

पहली कलीसिया - जिसकी स्थापना यीशु मसीह ने की आज भी मौजूद है। इसी कलीसिया में जो उसकी कलीसिया है वह उद्धार प्राप्त लोगों को मिलाता है। मसीह की कलीसिया कहीं भी पाई जा सकती है। धार्मिक लोग सांसारिक मान्यताओं का और मनुष्यों द्वारा स्थापित संप्रदायों का विरोध करते हैं और केवल नये नियम की शिक्षाओं और सिद्धांतों का नियमित रूपसे अनुसरण करते हैं।

प्रिय मित्र, क्या आप उस पहली कलीसिया के जिसकी स्थापना मसीह यीशु ने की थी, सदस्य है?

अनुवादकः भाई फैरल

शीशी में आंसू

(मत्ती 5:4)

डेविड रोपर

मत्ती 5 अध्याय में हर धन्य वचन का आरंभ "धन्य" से होता है जिसका अनुवाद संसार की परिभाषा की तरह "प्रसन्न" शब्द से किया जाए तो "प्रसन्न" हो सकता है। मत्ती 5:3-12 के आठ वाक्यों में हमें बाहरी परिस्थितियों के बावजूद सच्ची खुशी के लिए परमेश्वर की लिखी पर्ची मिलती है। इसके लिए मेरा शब्द है "अतिरक्त खुशी।"

हम ने देखा है कि हर धन्य वचन उसके विपरीत है जिसे संसार मानता है। पौलुस ने लिखा कि "परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है" (1 कुरिन्थियों 1:25)। यानी जो बात सांसारिक सोच से मूर्खता लगती है, जैसे कि धन्य वचन, वास्तव में वह ईश्वरीय बुद्धि का स्तंभ है। धन्य वचनों और उनमें शामिल सब बातों को अपनाने वाले इस बात की गवाही दे सकते है कि उनका परिणाम अतिरिक्त खुशी ही होता है।

इस पाठ में हम दूसरे धन्य वचन यानी "धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पाएंगे" (मत्ती 5:4)। का अध्ययन करेंगे। ये धन्य वचन स्पष्ट रूप में मानवीय बुद्धि के विपरीत है। वास्तव में हम "धन्य" शब्द की जगह "प्रसन्न" शब्द लगा दे तो यह विरोधाभासी प्रतीत होता है: "प्रसन्न हैं जो वे शोक करते हैं।" मानवीय बुद्धि शोक करने और उदासी को कम करके देखती है। रोना किसे पसंद है? हम हंसाने के लिए अभिनेताओं को पैसे देते हैं। अधिकतर लोग एल वीलर विल्कोक्स की इस भावुक अभिव्यक्ति से सहमत होंगे:

हंसो, तो जग तुम्हारे साथ हंसेगा;
रोओ, तो तुम्हें अकेले रोना पड़ेगा,
क्योंकि उदास बूढ़ी पृथ्वी को प्रसन्नता उधार चाहिए,
पर इसकी अपनी परेशानी बहुत है।

तौभी यीशु ने कहा, "धन्य है वे जो शोक करते हैं।" "जो शोक करते है" "के लिए शोक, विलाप करना।" प्राचीन यूनानी भाषा में शोक करने के लिए, अत्यधिक शोक को दशाते हुए सबसे चौंकाने वाले शब्दों में से एक" है। इसका "आम इस्तेमाल मृतक के लिए शोक करने के लिए किया जाता था।" पुराने नियम के यूनानी शब्द का इस्तेमाल याकूब के शोक करने के विवरण के लिए किया गया जब उसे लगा कि यूसुफ मर गया (देखें उत्पत्ति 37:34)। इसका इस्तेमाल दाऊद के शोक के वर्णन के लिए किया गया, जब उसके पुत्र अबशालोम की मृत्यु हो गई (देखें 2 शमूएल 19:2)।

अत्यंत शोक करने को सच्ची खुशी के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है? मुझे उम्मीद है कि इस पाठ के पूरा होने से पहले आपको यीशु की बात में स्वर्गीय बुद्धि दिख जाएगी।

और यह कि इसके नियम किस प्रकार आपकी खुशी में योगदान दे सकते हैं।

"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं....।"

वे शोक करने वाले जो शांति नहीं पाएंगे।

पहले तो यीशु ने यह नहीं चाहा कि लोगों को आशीष केवल इसलिए मिले कि वे रोते हैं। चिल्लाने के कार्य में कोई विशेष बात नहीं है। बाइबल आमतौर पर जोर देती है कि परमेश्वर चाहता है कि लोग खुश हो। नीतिवचन 17:22 में पढ़ते हैं, "मन का आनन्द अच्छी औषधि है।" पौलुस ने लिखा "प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं कि आनन्दित रहो।" (फिलिप्पियों 4:4)।

इसके अलावा बाइबल पक्का सिखाती है कि कुछ शोक करने वालों की शांति नहीं मिलेगी। उदाहरण के लिए पौलुस ने कहा, "संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है" (2 कुरिन्थियों 7:10ख) यह शोक किसी के कार्यों के परिणाम के कारण के साथ-साथ के लिए शोक का न होना या कम शोक करना है। इस विचार को उस छात्र के द्वारा समझाया जा सकता है जिसे परीक्षा में कम अंक मिलते हैं क्योंकि उसने पढ़ा नहीं। यीशु ने यह वचन दिया कि फेल हो जाने वाले आलसी छात्र "शोक करें" तो वे धन्य होंगे और उन्हें शांति मिलेगी।

पाप से जुड़े सांसारिक शोक के ढेरों उदाहरण हैं। उस शराबी पर ध्यान करें, जो सिरदर्द होने और अपनी नौकरी और परिवार छूट जाने पर शोक करता है, पर अपनी जीवन शैली में कोई परिवर्तन नहीं लाता। मसीह को पकड़वाने के बाद यहूदा "बहुत पछताया" (मत्ती 27:3); पर मन फिराकर वह प्रभु की ओर वापस नहीं आया। यीशु ने उसके लिए कहा, "यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता" (26:24)। द्वितीय आगमन पर, पश्चात्ताप न करने वाले लोग चट्टानों और पहाड़ों को पुकार-पुकार कर कहेंगे "हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने के प्रकोप से छुड़ा लो" (प्रकाशितवाक्य 6:16)। परन्तु प्रभु के वापस आने पर शांति की तलाश करने में बहुत देर हो चुकी होगी।

शोक करने वालों का एक और समूह है जिसे शांति नहीं मिलेगी। वे नये नियम में परमेश्वर के प्रकाशन को स्वीकार न करने के कारण धार्मिक शोक करने वाले है। इसका एक उदाहरण "द वेलिंग वॉल" के नाम से प्रसिद्ध दीवार यानी यरूशलेम को पश्चिमी दीवार पर इकट्ठा होने वाले यहूदी लोग है। विशेष अवसरों पर यहां स्तुतिमाला जपी जाती है:

यहूदी लोग इस्राएल की खोई हुई शान के कारण विलाप करते हैं और मसीहा और उसके राज्य के आने की प्रार्थना करते हैं, पर प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा के रूप में यीशु को मानने से इंकार करते हैं। उनका शोक करना धन्य होगा।

परमेश्वर के ढंग को स्वीकार न करने वाले शोक करने वालों के संबंध में मेरा ध्यान अपने बचपन के "शोक करने वाले का बैंच" और उसके जैसे ही आधुनिक पापी की प्रार्थना पर जाता है। उस पुराने बैंच पर बहुत शोक किया गया और बहुत से आंसू बहाए गए; परन्तु प्रभु ने हमें उसके पास इस प्रकार आने को नहीं कहा है। जब पौलुस अपने पापों पर शोक कर रहा था और प्रार्थना कर रहा था तो हनन्याह ने कहा, "अब देर क्यों करता है? उठ और उसका नाम लेते हुए बपतिस्मा ले और अपने पापों को धो डाल"

(प्रेरितों 22:16)।

शोक करने वालों को एक अंतिम श्रेणी पर विचार करते हैं, जो धन्य नहीं होंगे, यह समूह उनसे बहुत मिलता-जुलता है जिनकी बात पहले की जा चुकी है। यानी जो अपने पापों पर शोक करते हैं और उनका कुछ हल नहीं करते।

दक्षिणी सेंट लुइस एक अपहरणकर्त्ता को गोली लगने से अधरंग हो गया था और वह अचानक बहुत ही धार्मिक बन गया। वह प्रार्थना करता, पढ़ता और प्रचारकों को बुलाता था। (एक प्रचारक ने उसे बताया कि यदि वह परमेश्वर से शांति पाना चाहता है तो वह एक महंगा हीरा कलीसिया को दे; पर प्रचारक उसे अपने साथ ले गया)। वह व्यक्ति चंगा हो गया और जल्द ही फिर से अपने गैर कानूनी काम में लग गया।"

दिखावटी शोक करने वाले को शांति नहीं मिलेगी। यीशु ने कहा, "जो मुझसे प्रभु! हे प्रभु, कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21)। फिर यीशु ने कहा, "जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है" (यूहन्ना 3:36ख)।

शोक करने वाले, जिन्हें शांति दी जाएगी

अब सकारात्मक पर आते हैं। वे शोक करने वाले कौन हैं जो शांति पाएंगे? आयत स्वयं नहीं कहती। पर संदर्भ से संकेत मिलता है कि यीशु के मन में आत्मिक शोक करने यानी आत्मिक चिंता की बात थी। मत्ती 5:4 में मुख्य फोकस आयत 3 वाले आत्मिक रूप से वचिंत होने पर शोक करने पर था।

चौथी शताब्दी का धार्मिक अगुआ जॉन क्रिसोस्टोम अपने लेखों में से एक में कहता है कि धन्य वचन जिन से यीशु पहाड़ी उपदेश का आरंभ करता है "सोने की जंजीर की कड़ियों की तरह एक-दूसरे से जुड़े हैं" ...यीशु ने अचानक से धन्य वचनों का समूह नहीं बनाया बल्कि उसने ईश्वरीय तर्क संगत क्रम में उन्हें लगाया। उन में से हर एक अपने से पहले आने वाले के साथ जुड़ता है।

जेम्स ने मत्ती 5:4 के शोक करने को "आत्मा की निर्भरता की भावनात्मक अभिव्यक्ति" नाम दिया है। रोमियों 7 में पौलुस के शब्दों में हमें इस भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक उदाहरण मिलता है, "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (आयत 24)। ऐसे शोक करने और 2 कुरिन्थियों 7 वाले "परमेश्वर भक्ति का शोक" में एक रिश्ता है। "क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसे पश्चत्ताप के लिए काम करता है जिससे पछताना नहीं पड़ता..." (आयात 10) "क्योंकि वह शोक जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है खेद रहित मन फिराव उत्पन्न करता है, जो उद्धार का कारण बनता है।"

अपने ही पापों पर शोक करना हमारे लिए सामान्य अर्थ में पाप पर शोक करने का कारण भी होना चाहिए, संसार पर पाप के प्रभाव पर शोक करना, दूसरों के जीवनों में पापों पर शोक करना जो उन्हें नरक में भेज देगा। "धर्मी लूत को जो अधर्मियों के अशुद्ध चाल-चलन से बहुत दुखी था उनके अधर्म के कामों को देख देखकर हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था" (2 पतरस 2:7, 8)। यीशु ने यरूशलेम नगर को देखा और कहा, "हे यरूशलेम! हे यरूशलेम! कितनी ही बार मैं ने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी

अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूं, पर तुम ने यह न चाहा।" (लूका 13:34)। आज्ञा न मानने वाले नगर को देखकर वह "उस पर रोया" (19:41)। अपने खोए हुए यहूदी भाइयों का विचार करने पर पौलुस ने कहा, "मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखी रहता है। क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी है, आप ही मसीह से शापित हो जाता" (रोमियों 9:2, 3)। जब खोए हुओं के लिए हम इतना अधिक शोक करते हैं तो यह बात हमें सुसमाचार लेकर उनके पास जाने को विवश कर देगी (देखे रोमियों 1:14, 16)।

मैदानी उपदेश में यीशु ने पहले इस धन्य वचन की सकारात्मक बात कही, "धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हंसोगे" (लूका 6:21ख)। फिर उसने नकारात्मक बात बताई, "हाय तुम पर, जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे" (लूका 6:25ख)। आयत 25 में यीशु सामान्य हंसी की बात नहीं कर रहा था, बल्कि उस हंसी की बात कर रहा था जिससे हमारा मन बहलावा नहीं होना चाहिए, विशेषकर वह जो पापपूर्ण है। पाप के बारे में हंसने वाली कोई बात नहीं है।

भूत-सिद्धि क्या है?

पैरी बी. कॉथम

अब इस बात को दृष्टिकोण में रखकर कि बाइबल की शिक्षानुसार मनुष्य मरने के बाद भी होश में विद्यमान रहता है, कुछ लोग कहते हैं कि वे मरे हुए लोगों से बातें कर सकते हैं। परन्तु बाइबल कहीं पर भी ऐसी शिक्षा नहीं देती कि पृथ्वी पर जीवित मनुष्य उन लोगों की आत्माओं से बातें कर सकते हैं जो मर चुके हैं। वास्तव में, भूत-सिद्धि करनेवाले तथा भावी कहनेवाली आत्माओं को बुलानेवाले लोगों की पवित्र शास्त्र में कड़ी निंदा की गई है। लिखा है, ''ओझाओं और भूत साधनेवालों की ओर न फिरना, और ऐसों की खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।'' (लैव्यव्यवस्था 19:31; देखिए 20:6, 27; व्यवस्थाविवरण 18:10-12; प्रेरितों. 19:18-20; प्रकाशित. 21:8; 22:15)। वास्तव में, लोगों को परमेश्वर को ढूंढ़ना चाहिए। मृतकों से बातें करने का दिखावा नहीं करना चाहिए। उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था तथा चितोनियों को स्मरण करना चाहिए। (यशायाह 8:19, 20)। कुछ लोग जादू-टोने इत्यादि करके अन्य लोगों को ठगते हैं, और उनसे यों कहकर, कि वे उनके मरे हुए मित्रों और संबंधियों से बातें करके उन्हें उनका संदेश देंगे, उन्हें धोखा देते हैं।

एंदोर में भूत-सिद्धि करनेवाली स्त्री के घर में शाऊल के ऊपर शमूएल के प्रकट होने की घटना के विवरण को जब ठीक से पढ़ा जाता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है, कि शमूएल उस स्त्री के बुलाने से नहीं प्रकट हुआ था, और न ही उसने उस स्त्री से कुछ बात की थी। (1 शमूएल 28:3-25)। शमूएल स्वयं शाऊल पर प्रकट हुआ था, और उसने उससे बातें भी की थीं, परन्तु किसी के द्वारा नहीं। वहाँ शमूएल स्वयं प्रकट हुआ

था और भूत-सिद्धि करनेवाली वह स्त्री भय से अश्चर्य-चकित होकर देखती रह गई थी। वहाँ परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से शमूएल को भेजकर उस स्त्री की दुष्टता तथा धोखेबाज़ी को प्रकट किया था। भूत साधनेवाली उस स्त्री के पास जाकर शाऊल ने पाप किया था। (1 इतिहास 10:13, 14)। भूत-सिद्धि करना गंदा तथा शैतान का काम है और ऐसे काम करनेवाले लोग झूठे दावे करते हैं।

पिता की इच्छा को पूरी करने वाला पुत्र कौन है?

डा. एफ. आर. साहू (छ.ग.)

''तुम क्या सोचते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे, उसने पहले के पास आकर कहा, ''हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम करो।'' उसने उत्तर दिया ''मैं नहीं जाऊंगा; परन्तु बाद में पछता कर गया। फिर पिता ने दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उसने उत्तर दिया जी हां जाता हूं, परन्तु नहीं गया। इन दोनों में से किसने पिता की इच्छा पूरी की?'' उन्होंने कहा, ''पहले ने।'' यीशु ने उनसे कहा- ''मैं तुमसे सच कहता हूं, कि महसूल लेने वाले और वेश्याएं तुम से पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। क्योंकि यूहन्ना धर्म का मार्ग दर्शाते हुए तुम्हारे पास आया और तुमने उसका विश्वास न किया, और तुम यह देख कर बाद में भी न पछताये कि उसका विश्वास कर लेते।'' (मत्ती 21:28-32)।

आयात -28: के अनुसार, पभु यीशु, इस दृष्टांत का आरंभ इस प्रश्न के साथ करता है कि ''तुम क्या सोचते हो?''

प्रभु यीशु अपने सुनने वालों का ध्यान खींचने और उन्हें सोचने पर विश्वास करने के लिये अक्सर ऐसा ही करता था ताकि सुनने वाले उन बातों को सुनने के लिये और इच्छुक हो।

दो पुत्रों के इस दृष्टांत की कहानी किसी मनुष्य की है, जिसके दो पुत्र थे। वह दोनों से दाख की बारी में काम करने का आग्रह करता है, जिस तरह से परिवार या समाज में बेटों से पिता का आदर करने और उनकी बात मानने की अपेक्षा की जाती है। विशेष कर यदि बेटे अपने पिता के पास हो तो।

इस कहानी में मनुष्य परमेश्वर को दर्शाता है। और वह दो पुत्र यहूदियों की और संकेत को दर्शाता है।

आयात-29 यहां हम देखते हैं कि पिता के कहने के बाद पहले वाले पुत्र ने तुरन्त जवाब दे दिया कि ''मैं नहीं जाऊंगा?'' परन्तु बात में उसका मन बदला और पछता कर गया, जैसा लिखा है-''परन्तु बाद में पछता कर गया'' अर्थात उनको अपने पिता की आज्ञा और आग्रह को नकार देने का बड़ा अफसोस हुआ और पछता कर मन बदला और ''दाख की बारी'' में काम करने गया।

''दाख की बारी'' चूंकि, परमेश्वर के राज्य के रूपक को दर्शाता है, जिसमें सबसे पहले यहूदियों को परमेश्वर के लिये काम करना था। और यह बात उन यहूदियों को दर्शाता है, जिनका परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह था परन्तु बाद में वे पछताए थे।

आयात - 30 यहां पर पिता ने फिर वही आग्रह दूसरे पुत्र से किया तो उसने भी

तुरन्त उत्तर दिया और कहा-''जी हां जाता हूं'' परन्तु वह नहीं गया। अध्याय की इस आयत में दूसरे प्रकार के पुत्र के रूपक के लिये उन यहूदी लोगों को दर्शाता है जो परमेश्वर की आज्ञा मानने का दावा तो करते थे, परन्तु वास्तव में उसे मानते नहीं थे।

ठीक इसी प्रकार से संसार में आज भी बड़े-बड़े धार्मिक अगुएं, उपदेशक और व्यवस्थापक कहलाने वाले लोग मिलेंगे, जो अधिकतर दिखावे का काम करते हैं, पर परमेश्वर की शिक्षा और सच्चाई को वह स्वयं नकारते रहते हैं और उन्हीं बातों और कामों पर फोकस करते रहते हैं जो उनके अपने लाभ के होते है। प्रभु यीशु मसीह ने अपने समय के शास्त्री, फ़ारीसी, धार्मिक अगुओं और पुरनियों को फटकार लगाते हुए ठीक-ठीक ही कहा था- ''हे कपटियों तुम पर हाय, तुम मनुष्यों के लिये स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो न तो स्वयं ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो?'' (मत्ती 23:13, 15, 23, 25, 27 पढ़ें)।

आज बहुत सारी कलीसियाओं में ऐसे-ऐसे अगुएं और पुरनिये देखने को मिलते है, जो केवल लोगों को दिखाने का काम करते हैं, न की आत्मिक उन्नति के लिए? वचन हमें बताता है कि हमारी देह परमेश्वर का मंदिर है जिसके द्वारा ही हमें परमेश्वर की महिमा करनी है। (1 कुरि. 6:19-20)।

आज देखा जा रहा है कि लोग आत्मिकता के प्रति कम परन्तु भौतिकता के प्रति कुछ ज्यादा ही अस्त-व्यस्त हैं। और धार्मिक परम्पराओं की आड़ में मानो गोरख धंधा चला रहें है। पौलुस प्रेरित कहता है- ''पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ छिपा हुआ है।'' (कुलु 3:2)।

भाईयो, भौतिक लाभ के लिये आदमी कितनी ही बातें बढ़-चढ़कर के नियम बना लें या बहुत सारी विधिया ठहरा लें। परन्तु यदि वह सारे कार्य सुसमाचार के अनुसार नहीं तो आत्मिकता में कोई कैसे बढ़ सकता है? क्योंकि आत्मिकता की असली आधारशिला है, सुसमाचार की शिक्षा और उसकी आज्ञा। इसलिये यदि कोई सुसमाचार की बुनियादी बातों को छोड़ बहुरंगी बातों को गढ़ता है तो जिस दिन उसके कामों की परख होगी उस दिन उसकी मूर्खता भी प्रगट हो जाएगी। (1 कुरि. 3:9-13)।

इसलिये प्रियो, यदि हम आत्माओं को बचा रहे हैं और दिखाने के लिये कुछ और काम कर रहे हैं तो हम परमेश्वर की आज्ञा माननेवाले नहीं, पर आज्ञा को नकारने वाले हैं। और उस स्थिती में परमेश्वर (पिता) की इच्छा को कैसे पूरा कर सकते हैं? बल्कि उद्धार पाने वालों के लिये, स्वर्ग के द्वार को मानो बंद कर रहे हैं?

आयात 31 - दृष्टांत को मिलाने के बाद, प्रभु यीशु ने उन विद्वानों से जो वहां उपस्थित थे एक और प्रश्न करते हुए कहा- ''इन दोनों में से किसने पिता की इच्छा पूरी की?'' इस पर सुनने वालों ने बिना अपना विचार किये तत्परता के साथ तुरन्त उत्तर दिया; ''पहले ने'' अर्थात सुनने वालों ने बिल्कुल सही उत्तर दिया? क्योंकि पहले ने पछता कर दाख की बारी में काम किया, परन्तु दूसरे पुत्र ने बड़े प्यार से कहा जी हां जाता हूं कह कर पर उसने आज्ञा को नकार दिया? हम अपने होठों से प्रभु के नाम को रटते तो हैं, और उसके नाम से बड़े-बड़े काम भी करते तो हैं, पर हमारा मन हृदय उससे बहुत दूर रहता है तो भला इस दशा में कोई कैसे स्वर्ग को जा सकता है?

जैसे यीशु ने कहा था- ''जो मुझसे हे प्रभु हे प्रभु कहता है, उनसे हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' (मत्ती 7:21)।

आयत कि इस भाव को हम देखते हैं कि यहां पर जब लोगों ने सही उत्तर दिया तब प्रभु यीशु ने अपनी बातों को और स्पष्ट किया और कहा- ''मैं तुम से सच कहता हूं कि महसूल लेने वाले और वेश्याएं तुम से पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं?''

आज बहुत से धार्मिक लोग इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि हमने बहुत से धार्मिक काम किए हैं और वह परमेश्वर पर भरोसा न रख कर अपने धर्म के कामों पर भरोसा रखते हैं। और पापियों के प्रति कुढ़ते रहते हैं। यह सोच कर की यह तो एक पापी है। लेकिन पवित्र शास्त्र का नया नियम इस बात पर जोर देता कि इस जगत में पापियों का उद्धार संभव है क्योंकि संसार के धर्मियों से पहले पापियों का परमेश्वर के राज्य में जाना अवश्य था।

क्योंकि एक पापी ही अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर के पास आता है तो वह उस समय परमेश्वर की इच्छा को पूरी कर रहा होता है उदाहरण के लिये जैसे-एक पापिन स्त्री (लुका 7:37-50) और चुंगी लेने वाला जक्कई। (लुका 19:10)।

यीशु ने हमें बताया कि वह संसार के धर्मियों के लिये नहीं, पापीयों के लिये आया क्योंकि परमेश्वर ने पापियों से प्रेम किया। संसार के धर्मियों से पहले पापियों का परमेश्वर के राज्य में आना अवश्य था और उसके लिये परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र दे यिा (यूहन्ना -3:16-17; रोमि. 5:6-8)।

क्योंकि पापी जब अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर के पास आता है तो वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है। जैसे उड़ाऊ पुत्र, वह अपने पापों से मन फिरा कर अपने पिता के पास वापस आया और पिता अपने पुत्र के पश्चातापी हृदय को देख कर उस पर तरस खाता है और उसे गले लगा लेता है, क्योंकि उसने अपनी पिता की इच्छा को पूरा किया अपना मन बदल कर। (लूका-15:20-24)।

और जैसे चुंगी लेने वाले एक पापी ने अपनी छाती पीट-पीट कर अपने गुनाहों को मान लिया और अपने आप को बहुत छोटा कर दिया और इस तरह वह पापी धर्मी ठहरा (लूका 18:14)।

जैसे उस समय के धार्मिक अगुए अपने धर्म और धार्मिकता के कामों पर भरोसा रखते थे और व्यवस्था की शिक्षा तो देते थे लेकिन आप मानते नहीं थे। क्योंकि वे लोग परमेश्वर की अधिनता इंकार करते रहे और अपनी-अपनी ढिठाई के कारण राज्य के द्वार को बंद करते थे। इसी तरह से आज भी बहुत से धार्मिक अगुएं और उपदेशक यह समझ कर निश्चित हो गए हैं कि हम तो व्यवस्था के बड़े-बड़े काम कर रहे हैं तो सबसे पहले हमारा ही उद्धार होगा। जैसे एक फरीसी ने चुंगी लेने वाले एक पापी से अपने कामों का बखान करते हुए और उस पर आरोप लगाते हुए प्रार्थना में कहा था ''हे परमेश्वर मै तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं दूसरे मनुष्य के समान अंधेरे करने वाला अन्यायी और व्याभिचारी नहीं, और न उस चुंगी लेने वाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।'' (लूका 18:11-12)।

पर क्या वह फरीसी सच-मुच में धर्मी ठहराया गया? इसी तरह से प्रियो, मसीहीयत

में भी यदि मंडली के अगुंए या उपदेशक है और जिन-जिन बातों के लिये उन्हें नियुक्त किया जाता है, उन बातों में उन्हें एक-दूसरें के लिये एक अच्छा आदर्श बनना चाहिये। इसलिये यह ध्यान रखना होगा कि हमारी ढिठाई के कारण कही ऐसा न हो की कोई उद्धार से वंचित हो जाए। हमारे लिये इस विषय में महत्वपूर्ण शिक्षा क्या है, पतरस प्रेरित के पहले पतरस के अध्याय 5:1-3 तक पढ़ कर इस बात को हम समझ सकते है।

आयत : 32 के अनुसार हम देखते हैं कि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना जिसका वर्णन मत्ती 3:1-12 में मिलता है। वह धर्म के मार्ग को दर्शाते हुए यहूदियों के पास आया और उसने यह प्रचार किया कि ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।''

पर उस समय के धार्मिक अगुओं ने मसीह के संदेश को नकार दिया और मसीह का इंकार किया। यदि वे लोग मन फिराने के योग्य फल लाए होते तो अवश्य उन धर्मियों का सबसे पहले उद्धार हो गया होता। पर वे लोग मन फिराने में नाकाम रहे, पर पापियों ने इस उद्धार के संदेश को तुरंत मान लिया और परमेश्वर का अंगीकार किया। (लूका 7:29-30)।

इसी तरह से प्रियो, हम सब के सब पापी थे, संसार में आशाहीन और ईश्वर रहित थे, पर सुसमाचार पर विश्वास करने और पापों से मन फिरा कर आज्ञा मानने के द्वारा आज हमारा उद्धार संभव है (इफ़ि. 2:12-17)।

हम देखते हैं आयात-32 के अंतिम शब्दों को, जिस तरह से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा जब मन फिराव का बपतिस्मा लेने वालों की बड़ी भीड़ को देख कर भी धार्मिक अगुओं का मन बदला नहीं पर कठोर बना रहा।

आज इसी के समान संसार में बहुत से धार्मिक अगुवे अपने मन की कठोरता के कारण इस सत्य से जिससे उनका उद्धार होता प्रेम करना नहीं चाहते, और यही समझ कर कि मसीहीयत से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखने के बावजूद भी हम स्वर्ग को जा सकते हैं, हमारा उद्धार हो सकता है, हमें पापों की क्षमा मिल सकती है, यह सोच कर संतुष्ट हो जाते हैं। लेकिन पवित्र बाइबल हमें बताती है कि संसार में मनुष्यों की धार्मिकता के सारे कार्य मैले-चिथड़ों के समान है? (यशा-64:6)।

और मनुष्य संसारिक धार्मिकता के द्वारा परमेश्वर के निकट धर्मी ठहर नहीं सकता (रोमि 3:20)। इसलिये यदि फिर भी मनुष्य, अपनी ढिठाई और मन की कठोरता से मन फिरा कर सच्चाई के इस संदेश को मान लें तो निश्चित रूप से उसका उद्धार हो जाएगा। और सच्चाई क्या है? सुसमाचार यह है कि यीशु मेरे पापों के लिये मर गया, गाड़ा गया, और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठा और जो लोग सुसमाचार को मानकर बपतिस्मा लेते हैं वे अवश्य अनन्त जीवन के वारिस होंगे परन्तु यह तभी होगा, जब वे अन्त तक विश्वायोग्य बने रहेंगे। यदि आप एक मसीही बनना चाहते हैं तो यीशु में विश्वास कीजिये, उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कीजिये, अपने पापों से मन फिराएं तथा जल में डूब का बपतिस्मा लें। (प्रेरितों 2:38 मत्ती 10:32-33; मरकुस 16:16; रोमियों 6:34, प्रेरितों 22:16)।